



International Journal of Advanced Academic Studies

E-ISSN: 2706-8927

P-ISSN: 2706-8919

www.allstudyjournal.com

IJAAS 2020; 2(4): 361-363

Received: 20-08-2020

Accepted: 24-09-2020

ज्योति राठौर

एम. फिल शोधार्थी, हिंदी,
अपेकस युनिवर्सिटी जयपुर,
राजस्थान, भारत

डॉ. वीणा छंगाणी

अधिष्ठाता, मानविकी एवं कला
संकाय, अपेकस विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:

ज्योति राठौर

एम. फिल शोधार्थी, हिंदी,
अपेकस युनिवर्सिटी जयपुर,
राजस्थान, भारत

आदिवासी समाज का यथार्थ: रणेन्द्र कृत “ग्लोबल गाँव के देवता” के सन्दर्भ में

ज्योति राठौर और डॉ. वीणा छंगाणी

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन आदिवासियों की आधुनिक समस्याओं पर आधारित है जिसके अंतर्गत आदिवासियों के आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक जीवन को आधार बनाया गया है। अतः यह अध्ययन इस बात की पुष्टि करता है कि विकास के बढ़ते अवसरों ने आदिवासियों के सांस्कृतिक मूल्यों, उनकी भाषा शैली, धार्मिक व्यवस्थाओं तथा व्यवसाय को बुरी तरह प्रभावित किया है। जिसके परिणाम के रूप में आदिवासी वर्ग के अंतर्गत लगातार पलायन और बेरोजगारी जैसी समस्याओं का उत्पन्न होना है।

कूट शब्द – आदिवासी, सांस्कृतिक जीवन, व्यवसाय जीवन, आर्थिक जीवन, वैश्वीकरण

प्रस्तावना

आदिवासी शब्द दो शब्दों के मेल से बना है। आदि और वासी। आदि का अर्थ मूल है और वासी का अर्थ निवासी है। अतः आदिवासी का अर्थ हुआ मूलनिवासी। संस्कृत ग्रंथों में आदिवासियों को वनवासी कहा गया है। गिरिजन नाम से महात्मा गांधी जी ने उन्हें संबोधित किया है। वनवासी और जंगली भी इन्हें दक्षिण भारतीय लोग द्वारा कहा गया है। आर एस एस वाले इन्हें वनों में रहने के कारण वनवासी पुकारते हैं। भारत में रह रहे आदिवासियों के लिए जो नाम प्रयोग में लिए जाते हैं वह इस प्रकार हैं आदिवासी, आदिमवासी, कबीली आबादी, जनजाति आदि। किसी देश में जो जाति आदि युगों से रहती आई हो उसे आदिवासी की संज्ञा दी जाती है। यह भारत के मूल निवासी है। आज के समय जंगल में रहने वाले जिनकी अलग संस्कृति हो, अलग रहन-सहन हो, एक अलग भाषा हो, एक अलग जीवन बिता रहे हो, कुछ अलग परंपराएं हो, जो जंगलों पहाड़ों पर रहते हो और अपने सांस्कृतिक मूल्यों को संभाल कर रखने वाले हो ऐसे प्राणियों के लिए आदिवासी शब्द का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के मुख्य उद्देश्य आदिवासियों के आधुनिक जीवन पर प्रकाश डालना है जिसके अंतर्गत निम्न बिन्दुओं को आधार बनाया गया है –

1. आदिवासियों के जीवन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।
2. आदिवासियों के जीवन को प्रभावित करने में वैश्वीकरण के प्रभाव का आंकलन करना।

आदिवासियों का सामाजिक और भौगोलिक जीवन

हाल ही में की गई जनगणना के आधार पर आदिवासियों की संख्या 1 करोड़ 90 लाख से भी अधिक है। यह समस्त भारत के विभिन्न प्रांतों में पाए जाते हैं। इनकी ना तो संस्कृति, न ही भाषा, न ही इनकी मूल जाति, ना ही इतनी रीति-रिवाज एक जैसे है। इन सब बातों में अंतर पाया जाता है आदिवासियों को हम उनके क्षेत्रों के आधार पर 3 वर्ग में बैठते हैं।

1. दक्षिण पश्चिमी भागों की पहाड़ियों, पूर्वी घंटों और पश्चिमी घंटों 16 अक्षांश रेखा से नीचे बसने वाली दक्षिण भारत की जातियां।
2. मध्यवर्ती भारत-(1) पहाड़ियों में और(2) पठारों में रहने वाली जातियां। जो दक्षिण भारत को सिंधु-गंगा के मैदान से अलग करती है।
3. उत्तरी तथा उत्तरी पूर्वी पर्वत घाटियां तथा भारत की पूर्वी सीमांत प्रदेशों में रहने वाली जातियां।

व्यवसाय जीवन

आदिवासी अधिकतर खेती पर निर्भर है। खेती के अलावा यह लोग मजदूरी भी करते हैं यह अभी तक प्राकृतिक अर्थव्यवस्था पर ही निर्भर है, इसलिए इनकी जमीन इतनी उपजाव नहीं होती है। यह लोग जानवर को पालते हैं जैसे बकरियां, बैल, बैड आदि। जरूरत के समय जानवरों को बेचकर धन से अपनी जरूरत पूरी कर लेते हैं। वनों से प्राप्त जंगली फल सब्जियों का सेवन भी करते हैं और बाजार में बेच कर अपना जीवन यापन भी करते हैं। शहद को एकत्रित कर खाने में उसका सेवन करते हैं।

सांस्कृतिक जीवन

आदिवासी बहुत ही शादी वाले होते हैं। आदिवासी बहुत ही सादगी वाला पहनावा पहनते हैं। आदमी धोती, कुर्ता, बड़ी माथे पर पगड़ी पहनते हैं। औरत सीधी सादी साड़ियां, चांदी पीतल, कांसे के आभूषण /जेवर पहनती है। आदिवासी वनों में रहते हैं इसलिए वह वन्य संपदा का उपयोग करते हैं। वन में आने वाले कंदमूल आदि खाकर जीवन यापन करते हैं। यह मांसाहारी और शाकाहारी दोनों होते हैं। जानवरों के मांस आदि का भी सेवन करते हैं। मधु का भी सेवन करते हैं। खेती से उगाया गया अनाज आदि भी खाते हैं। आदिवासी लोग जंगलों पहाड़ों में निवास करते हैं यह लोग बहुत ही सादगी भरा जीवन जीते हैं यह लोग बाग और वृक्षों के जड़े हुए पत्तों से अपनी झोपड़ी बनाते हैं। यह उनके प्रकृति प्रेमी होने का सुंदर उदाहरण है।

आर्थिक जीवन

आदिवासियों के जीवन का मूल मंत्र श्रम है। उन्होंने कभी पूंजी को महत्व नहीं दिया। समूह में रहकर जीवन जीना इन्हें प्रिय है। आदिवासी प्रायः कृषि, उपज संग्रह, शिकार, मछली पकड़ना, पशुपालन, मजदूरी आदि काम करते हैं। यह लोग गरीब होते हैं। इनके पास पैसे नहीं होते हैं वह अपना तन ढक सके। यह मेहनत मजदूरी करके अपना जीविका चलाते हैं।

धार्मिक और सांस्कृति जीवन

आदिवासियों के धर्म को जन जाति धर्म रिलिजन आदि नामों से पुकारा जाता है। आदिवासी प्रकृति की पूजा करते हैं। प्रकृति में विद्यमान पहाड़, नदी, जल, चांद, सूर्य को देवता मानकर उनकी अराधना करते हैं।

आदिवासी समाज की समस्याएं विकास जनित विनाश

आदिवासियों के अस्तित्व का प्रश्न जहां तक उनके जल, जंगल, जमीन से जुड़ा है, वही उनके नाम की परिभाषा, उनकी सामाजिक संरचना, जीवनयापन के साधनों से भी जुड़ा है। आदिवासियों ने अपने इस विरासत, संस्कृति जीवन शैली को जीवित रखा है। यह अपनी पहचान को बनाए हुए है। परंतु सरकार की विकास नीतियों के कारण उनके अस्तित्व पर खतरा मंडरा रहा है। वे आज भी अपनी संस्कृति और सभ्यता को बचाए हुए हैं। इन सब की असीमता को बचाए रखने के लिए जरूरी है इनकी रक्षा करना। अन्यथा यह नीतियां आदिवासियों के अस्तित्व के लिए बहुत बड़ा

खतरा है। आदिवासियों को विस्थापन, जंगलों का दोहन, आर्थिक संकट, सांस्कृतिक संकट, बेरोजगारी, कुपोषण, नशाखोरी, देह व्यापार, शैक्षणिक समस्याओं से जूझना पड़ रहा है।

सांस्कृतिक विघटन

आदिवासी समुदाय अपनी एक अलग संस्कृति, धर्म के कारण रीति-रिवाजों के कारण एक अलग अस्तित्व रखते हैं, जिससे हम ठुकरा नहीं सकते। उनका खान-पान, रहन-सहन, वेशभूषा, सामूहिक संस्कार, कला, पर्व त्यौहार उन्हें एक अलग पहचान देती है जो उन्हें एक विशिष्ट समाज बनाती है। आदिवासी अपने संस्कृति से दूर हो रहे हैं। हीनता की भावना उन्हें इनकी संस्कृति से दूर कर रही है। अपनी संस्कृति के प्रति हीनता का मुख्य कारण यह है कि बाहरी संस्कृति का समाज बहुत अच्छा स्थान, सम्मान देता है। बाहरी समाज की नजर में आदिवासियों का रीति-रिवाज, धर्म प्रचार, संस्कृत साहित्य भी शत शत नमन कोटि का और पुराना है।

अर्थव्यवस्था की समस्याएं

आदिवासियों की अर्थव्यवस्था के मध्य में पूंजी कमाना लक्ष्य कभी नहीं रहा। यह श्रम करके अपनी जीविका को चलाते हैं। इनकी पारंपारिक अर्थव्यवस्था की चाबी श्रम रहा है। इनकी अर्थव्यवस्था मुख्यतः पशुपालन, जंगल, खेती, हस्तकला, रसिया बनाना, कपड़ों की रंगाई बुनाई करना, जंगल से फूल फल बेचना, पशु बेचना आदि से संबंधित है लेकिन भारत सरकार की विकास नीतियों ने इनकी इस अर्थव्यवस्था के स्त्रोत को भी उनसे छीन लिया। दिल्ली में आदिवासी खेती करते थे। जब इनकी जमीन छीन ली गई तब वह लोग खेतीहर किसान या मजदूर बन गए। सरकारी नीतियों की वजह से एक तरफ तो इन्हें विस्थापन का दंश झेलना पड़ा जिससे इनकी आर्थिक व्यवस्था प्रभावित हुई है तो दूसरी ओर वन कानून ने वन्य संपदा से भी दूर कर दिया गया जिससे इनकी आर्थिक व्यवस्था प्रभावित हुई है।

भाषा से संबंधित समस्या

भाषा के विषय में यदि देखें तो यह विदित होता है कि आदिवासियों का उनकी अस्मिता से बहुत गहरा संबंध है, कुछ दशकों से इनका अस्तित्व और अस्मिता खतरे में आ गयी है तो उसका प्रभाव भाषा पर भी स्वाभाविक ही पड़ेगा। यूनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया के 2500 संकट के दौर से गुजर रही है। आदिवासियों को जो शिक्षा मिलती है वह उनकी मातृभाषा में ना मिलकर उनकी प्रादेशिक भाषा में मिलती है। इसकी वजह से उनकी भाषा पिछड़ गई है। सरकारों का भी आदिवासियों की भाषाओं के लिए ऐसा दृष्टिकोण उनकी भाषा रूपी अस्तित्व और अस्मिता के लिए समस्या बनता जा रहा है।

पलायन एवं बेरोजगारी

आदिवासियों से भूमि और वन छिन जाने के पश्चात उनकी अर्थव्यवस्था चरमरा गई, यही मजदूरी उन्हें मजदूरी करने के लिए प्रेरित करती है। मजदूरी की तलाश में यह लोग महानगरों की ओर पलायन करने पर विवश है। एक तो सरकार द्वारा बनाई गई विकास के नाम पर बड़ी बड़ी परियोजनाएं, आदिवासियों की भूमि को अनुपजाऊ बना रही है। तो दूसरी ओर नए वनों के लिए बनाए कानून आदिवासियों को वनों से दूर कर रहे हैं। जिसकी वजह से आदिवासी अपने जीवनयापन के लिए वहां से पलायन करने पर विवश है वह लोग महानगरों में अपने भविष्य ढूढ़ने चल देते हैं।

वैश्वीकरण/ग्लोबलाइजेशन

वैश्वीकरण वह शब्द है जिसका उपयोग दुनिया की अर्थव्यवस्थाओं, संस्कृतियों और आबादी की बढ़ती निर्भरता का वर्णन करने के लिए

किया जाता है, जो माल और सेवाओं, प्रौद्योगिकी, और निवेश, लोगों और सूचनाओं के प्रवाह में सीमा पर व्यापार द्वारा लाया जाता है। कई शताब्दियों में इन आंदोलनों को सुविधाजनक बनाने के लिए देशों ने आर्थिक भागीदारी का निर्माण किया है। प्राचीन काल से, मनुष्यों ने प्रौद्योगिकी और परिवहन में सुधार द्वारा सक्षम वस्तुओं के निपटान, उत्पादन और विनिमय के लिए दूर के स्थानों की तलाश की है। लेकिन 19 वीं शताब्दी तक वैश्विक एकीकरण नहीं हुआ।

वैश्वीकरण प्रत्येक देश को प्रोत्साहित करता है कि वह तुलनात्मक लाभ के रूप में ज्ञात संसाधनों का कम से कम उपयोग करके सर्वश्रेष्ठ उत्पादन करे। यह अवधारणा उत्पादन को अधिक कुशल बनाती है, आर्थिक विकास को बढ़ावा देती है, और वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों को कम करती है, जिससे उन्हें विशेष रूप से निम्न-आय वाले घरों के लिए अधिक किफायती बनाते हैं। बड़े बाजार कंपनियों को अधिक ग्राहकों तक पहुंचने में सक्षम बनाते हैं और व्यापार करने की निर्धारित लागतों पर अधिक लाभ प्राप्त करते हैं, जैसे कारखानों का निर्माण करना या अनुसंधान करना। प्रौद्योगिकी फर्मों ने इस तरह से अपने नवाचारों का विशेष लाभ उठाया है। विदेशों से आने वाले देशों ने अपने उत्पादों को बेहतर बनाने के लिए देशों की कंपनियों को चलाया। परिणामस्वरूप उपभोक्ताओं के पास बेहतर उत्पाद और अधिक विकल्प हैं।

वैश्वीकरण के कारण

बेहतर परिवहन, वैश्विक यात्रा को आसान बना रहा है। उदाहरण के लिए, हवाई यात्रा में तेजी से वृद्धि हुई है, जिससे दुनिया भर में लोगों और सामानों की अधिक आवाजाही हो सकती है।

बेहतर तकनीक जो दुनिया भर में सूचनाओं को संप्रेषित और साझा करना आसान बनाती है। जैसे इंटरनेट। उदाहरण के लिए, इस वेबसाइट पर सुधार पर काम करने के लिए, मैं elance.com जैसे वैश्विक ऑनलाइन समुदाय में जाऊंगा। वहां, किसी भी देश के लोग सेवा प्रदान करने के अधिकार के लिए बोली लगा सकते हैं। इसका मतलब है कि मैं अक्सर लोगों को अपेक्षाकृत सस्ते में नौकरी करने के लिए पा सकता हूँ क्योंकि भारतीय उप-महाद्वीप में श्रम लागत अपेक्षाकृत कम है।

कई अलग-अलग अर्थव्यवस्थाओं में वैश्विक उपस्थिति के साथ बहुराष्ट्रीय कंपनियों का विकास।

वैश्विक व्यापारिक ब्लॉकों की वृद्धि जिन्होंने राष्ट्रीय बाधाओं को कम किया है। (उदा। यूरोपीय संघ, नाफ्टा, आसियान)

वैश्विक व्यापार को प्रोत्साहित करने वाले टैरिफ बाधाओं को कम करना। अक्सर यह विश्व व्यापार संगठन के समर्थन के माध्यम से हुआ है।

वृद्धि की विशेषज्ञता हासिल करने के लिए पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं से लाभ का फायदा उठाने वाली फर्मों। यह नए व्यापार सिद्धांत की एक अनिवार्य विशेषता है।

वैश्विक मीडिया का विकास।

वैश्विक व्यापार चक्र। आर्थिक विकास प्रकृति में वैश्विक है। इसका मतलब है कि देश तेजी से परस्पर जुड़े हुए हैं। (उदा। एक देश में मंदी वैश्विक व्यापार को प्रभावित करती है और प्रमुख व्यापारिक भागीदारों में आर्थिक मंदी का कारण बनती है।)

वित्तीय प्रणाली प्रकृति में तेजी से वैश्विक। जब अमेरिकी बैंकों को उप-प्राइम बंधक संकट के कारण नुकसान हुआ, तो यह अन्य देशों के सभी प्रमुख बैंकों को प्रभावित किया जिन्होंने अमेरिकी बैंकों और बंधक कंपनियों से वित्तीय डेरिवेटिव खरीदे थे।

पूंजी की बेहतर गतिशीलता। पिछले कुछ दशकों में, पूंजी अवरोधों में सामान्य कमी आई है, जिससे विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं के बीच पूंजी प्रवाह आसान हो गया है। इससे फर्मों को वित्त प्राप्त करने की

क्षमता में वृद्धि हुई है। इसने वैश्विक वित्तीय बाजारों की वैश्विक अंतर्संबंधता को भी बढ़ाया है।

श्रम की गतिशीलता में वृद्धि। लोग काम की तलाश में विभिन्न देशों के बीच जाने के लिए अधिक इच्छुक हैं। वैश्विक व्यापार प्रेषण अब विकसित देशों से विकासशील देशों में स्थानांतरण में बड़ी भूमिका निभाते हैं।

इंटरनेट यह फर्मों को वैश्विक स्तर पर संवाद करने में सक्षम बनाता है, इससे पैमाने की प्रबंधकीय विसंगतियों को दूर किया जा सकता है। फर्म फर्मों की एक व्यापक पसंद से निपटने से सस्ती आपूर्ति प्राप्त करने में सक्षम हो सकती है।

आदिवासियों पर वैश्वीकरण का प्रभाव

आदिवासियों के लिए, वैश्वीकरण बढ़ती कीमतों, नौकरी की सुरक्षा की हानि, स्वास्थ्य देखभाल की कमी और आदिवासी विकास कार्यक्रमों से जुड़ा हुआ है। वैश्वीकरण आदिवासियों को दी जाने वाली शिक्षा और नौकरी के आरक्षण के संदर्भ में संवैधानिक सुरक्षा को भी कमजोर कर सकता है।

सरकार द्वारा चलाई गई योजनाएं

1. भारत में अनुसूचित जनजातियां
2. राष्ट्रीय अनुसूचित जाति-अनुसूचित जनजाति हब
3. प्रधानमंत्री वन धन विकास योजना
4. राष्ट्रीय संस्थान
5. जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार की प्रमुख योजनाओं की जानकारी
6. अनुसूचित जनजातियों के विकास के लिए संवैधानिक प्रावधान
7. उत्कृष्टता केन्द्रों के समर्थन के लिए वित्तीय सहायता

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के विश्लेषण के पश्चात यह कहा जा सकता है कि आदिवासियों का जीवन बेहद कठिनाइयों से घिरता जा रहा है जिसके अंतर्गत आदिवासी जीवन के विभिन्न आयामों का निरंतर क्षरण स्पष्ट देखा जा सकता है। विकास की अंधी दौड़ से बुरी तरह प्रभावित आदिवासी जीवन अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को त्यागने पर मजबूर है। सरकारी तंत्र की विफलता का परिणाम है कि आदिवासियों के कल्याण हेतु चलाई जाने वाली योजनाओं का लाभ जमीन पर होता नहीं दिखाई दे रहा है अतः सरकार को चाहिए कि इस दिशा में एक प्रभावी राष्ट्रिय नीति का क्रियान्वयन किया जाये ताकि आदिवासियों को भी जीवन की मुख्य धारा से जोड़ा जा सके। तथा समय समय पर ऐसे कार्यक्रम आयोजित किये जो आदिवासियों की शिक्षा, स्वास्थ्य अथवा सर्वांगीण विकास की दिशा में कार्य कर सके।

सन्दर्भ

1. M. N. Shriniwas (2009) आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, राजकमल प्रकाशन समूह ।
2. राकेश कुमार तिवारी (1990) आदिवासी समाज में आर्थिक परिवर्तन, Nardarna Buka Sentara
3. अनुशब्द, चारु गोयल (2017) लोक और शास्त्र : जनजातीय साहित्य, वाणी प्रकाशन ।
4. डॉ. जनक सिंह मीणा, कुलदीप सिंह मीणा (2018) भारत के आदिवासी: चुनौतियां एवं सम्भावनाएं, वाणी प्रकाशन ।
5. शम्भू लाल दोशी (1992) राजस्थान की अनुसूचित जनजातियां, हिमांशु पब्लिकेशन्स ।